पाठ-19

मीरा पदावली

– संकलित

आइए सीखें

■ पदों का सस्वर वाचन ■ भक्ति भाव की महत्ता ■ तत्सम् शब्द ■ पर्यायवाची शब्द ■ मानक शब्द ■ संज्ञा व सर्वनाम ■ विशेषण और क्रिया।

जागो बंसी बारे ललना, जागो मोरे प्यारे।
रजनी बीती भोर भयो है, घर घर खुले किवारे।
गोपी दही मथत सुनियत हैं, कंगना के झनकारे॥
उठो लालजी भोर भयो है, सुर नर ठाढ़े द्वारे।
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल, जय जय सबद उचारे॥

बसो मोरे नैनन में नन्दलाल।
मोहनी मूरत साँवरी सूरत, नैना बने बिसाल।
अधर सुधारस मुरली राजति, उर बैजन्तीमाल।
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भगत-बछल गोपाल।

हरि, तुम हरो जन की पीर।
द्रौपदी की लाज राखी, तुम बढ़ायो चीर।
भक्त कारण रूप नरहरि, धर्‌यो आप सरीर।
हिरण्यकशिपु मारि लीन्हों, धर्‌यो नहीं धीर।
दासी मीरा लाल गिरिधर, चरण कँवल पै सीर।

– मीराबाई

शिक्षण संकेत

▸ छात्रों से पदों का सस्वर वाचन करवाएँ ▸ भक्तिपरक रचनाओं का संग्रह करें तथा छात्रों से उनका पाठ करवाएँ ▸ जीवन मूल्यों के बारे में छात्रों को बताएँ ▸ हिरण्यकश्यप और प्रहलाद का प्रसंग बच्चों को सुनाएँ।

शब्दार्थ

जागो=उठो, नींद से उठना। **रजनी**=रात्रि, रात। **भयो**=हुआ है। **किवारे**=दरवाज़े, द्वार, पट। **ललना**=प्यारा बच्चा। **दही मथत**=दही को बिलोकर मक्खन और मही अलग-अलग करना। **झनकारे**=झनकार, आवाज़, ध्वनि। **भोर**=सबेरा। **सुर**=देवता। **नर**=मनुष्य। **ठाढ़े**=खड़े। **कुलाहल**=हल्ला-गुल्ला, आवाज़, कोलाहल। **सबद**=शब्द। **उचारे**=उच्चारित किए, बोले। **बसो**=निवास करो, बस जाओ। **मोरे**=मेरे। **नंदलाल**=नंद के लाल, श्रीकृष्ण। **मोहनी**=मन मोहक, मनभावन, अच्छी लगने वाली। **मूरत**=मूर्ति। **बिसाल**=बड़े। **अधर**=होंठ। **सुधारस**=अमृत रस। **राजति**=सुशोभित, सुंदर दिखती। **कटि**=कमर। **तट**=किनारा। **सोभित**=अच्छा, शोभायमान, सुंदर। **नूपुर**=घुँघरू। **रसाल**=रसयुक्त, मधुर, मीठे। **भगत-बछल**=भक्त वत्सल, भक्तों से प्रेम करने वाले। **चीर**=वस्त्र कपड़ा। **नरहरि**=नृसिंह अवतार। **धीर**=धीरज। **हिरण्यकशिपु**=हिरण्य कश्यप (भक्त प्रहलाद के पिता)। **धर्‌यो**=रखना।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. (क) सही जोड़ी बनाइए—

- साँवरी – मूरत
- कंगना के – कँवल
- मोहनी – सूरत
- चरण – झनकारे

(ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

- बसो मोरे नैनन में ..... । (गोपाल/नंदलाल)
- उठो लालजी ..... भयो है। (भोर/शोर)
- द्रोपदी की लाज राखी तुम..... चीर। (बढ़ायो/चलायो)
- छुद्र घंटिका ..... तट सोभित। (कटि/बैनी)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

(क) गोपी सुबह-सुबह क्या मथती है?

(ख) मीरा हरि से क्या हरने के लिए कह रही है?

(ग) भक्त के कारण हरि ने कौन-सा रूप धारण किया था?

(घ) ग्वाल बाल किन शब्दों का उच्चारण कर रहे हैं?

(ङ) मीरा नंदलाल को कहाँ बसाना चाहती है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-से-पाँच वाक्यों में दीजिए—

(क) मीरा ने वंशीवाले को जगाने के लिए भोर के किन-किन क्रिया-कलापों का वर्णन किया है?

(ख) मीरा के पद के आधार पर श्रीकृष्ण के रूप सौन्दर्य का वर्णन कीजिए।

(ग) मीरा ने प्रभु से ''संतन सुखदाई'' क्यों कहा है?

(घ) द्रोपदी की लाज कृष्ण भगवान ने किस तरह बचाई थी?

(ङ) कौन-कौन से उदाहरण देकर मीरा मनुष्यों की पीर दूर करने की प्रार्थना कर रही है?

भाषा की बात

4. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—

कंगन, मुरली, नूपुर, सुधारस, प्रभु, क्षुद्र, वैजन्तीमाल, हिरण्यकश्यपु

5. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए—

सूखदाई, कगंना, गिरीधर, मुरत, वीसाल, दोपदी

6. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए—

रजनी, भोर, सुर, नर, नैन, कँवल

यह भी जानिए

निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़िए तथा रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए—

- बसो <u>मोरे</u> <u>नैनन</u> में नन्दलाल।
- मोहनी <u>मूरत</u> <u>साँवरी</u> सूरत नैना बने बिसाल।

उपर्युक्त रेखांकित शब्द-मोरे, नैनन, मूरत और साँवरी बोली के रूप हैं। ऐसे शब्द अमानक शब्द कहलाते हैं। इनके मानक रूप क्रमशः मेरे, नैनों, मूर्ति और साँवली हैं।

निम्नलिखित तालिका में कुछ अमानक शब्दों के मानक रूप दिए गए हैं —

अमानक		मानक
अचरज	–	आश्चर्य
कलेश	–	क्लेश
जतन/यतन	–	यत्न
कारज/काज	–	कार्य/काम
आखर	–	अक्षर
भगत	–	भक्त

माखी	–	मक्खी
किवार	–	किवाड़
धुनि	–	ध्वनि
सिगरे	–	सब, सभी
कोउ	–	कोई
दुआरे	–	द्वार

7. **निम्नलिखित शब्दों के मानक रूप लिखिए—**
   मोरे, ठाढ़े, सबद, उचारे, छुद्र, सोभित
8. **निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए—**
   दही, दूध, नैन, कान, ओठ

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए—

''आत्मा व परमात्मा ज्योति-स्वरूप हैं। यह स्मरण रखने के लिए शुभ कार्यों में सर्वप्रथम दीपक प्रज्ज्वलित किया जाता है। इसकी लौ का एकटक ध्यान करने से एकाग्रता व स्मरण शक्ति बढ़ती है और यह प्रेरणा मिलती है कि ऊपर की ओर उठती हुई लौ के समान हम भी उच्च कर्म करें और चारों ओर ऊर्जा और ज्ञान का प्रकाश बिखेरें। दीपक स्वयं जलकर त्याग और बलिदान की प्रेरणा देता है।''

9. **उपर्युक्त गद्यांश में से संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं विशेषण शब्दों को छाँटकर लिखिए।**

अब करने की बारी

- मीरा के अन्य पदों को खोजिए एवं कक्षा में सस्वर सुनाइए।
- कृष्ण भक्त कवियों के नामों की सूची बनाइए।
- श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप का चित्र बनाइए।

❑❑